TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4448**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

र्णाणंदमना ॥सुमाणसमंबसुकलंसुमते।सोममाम्सगयंतउमांडं।रिद्धिचरिदंसपकसुखकिती।कसायमसमापणवाहे तिमसा॥
महसाप॥ वानकाणिसुकविघनह्रिमानिथिकरिफलदेमिकुपसेमरा आनसुत।पुलगार्धसंवेवि॥१जगनायककरेएकसुनसा।विघनव
ग्गावरवीर।मातिनंदनवंदमनयन।समकंमाइसधीर॥२खरतरगछनाइकधरो।श्रीजिनसिंघसूरिंसा।विनयचंदविद्यानिलो।हीरनं
दमनसुभीम॥३एरयधरीगुरहीरआ।पदपंकजपणमेइ।अरमावारितरिदयधरी।कथासुअन्यकदेइ॥४करिमनसुमकवियण
तदह।अन्यकरोतरहर।मकलसीयहसंसारसुख।हववोहगसहइहरि॥५मसावपदिली॥ पासजिणंदसुहाविये इनिवारीयइक
समलहरि।पखी॥ रागकेदारगोडी॥ इरवदेसप्रसिधानगररासरहमामा।गहमवमंदिरपोलिप्रकारा।सरससरोवरमध्यासु
रणवारासीन्यातिपवनसीम।विबुधलोकनिहांनिवसइहर सभविसयाथीस॥६देयदूसविनादंडनदीसइलोकमंका रिवी
तंक्षपदीपकदलभूविखवबद्धतरवारि।कनाप्तहणात्रसंतो। नीमतंसुणीयइमारि।लपमीविलसइसकुसदमुक्तिरता।
कहीयइजार॥७वादसुतरकविवारतासा।दिलहीजइ। मांमा।बंधनघोएदंडलोकहइविसनीदामा।मायावीपरवा
जकरवाञ्जोधीयाग्रांकउ।अम्पलोसीयालोकउवेवारीबजं सां॥८॥ कामहलियरवारि निरघणछंससमां।मा।परखधपुरा
सो।लएकामिव्रजरावइरवान।परवमणपरकामणमुविवा। बनाथयारा।परवललेवाकाजइमरहूंटामरमा।ति॥१०वीमद
वाजन्यायपंटावा।जइदरवार।पालीपरववानिग।मिम।म्यामवकार।दसदिदसनीवणुधणीजिइधापार।नगरवर्णमाकहुती।
किमइनमावकपार॥१०इइपरीमांदुअधरीसुपमंतरमहीसोगा।अम्पवंतलकरूपामीयमहलमकोटीधउलोक।मालिसदधनश्री
विसोकश्रासुधसिद्ध।वामानिवासहभ्यामामदागासरवाधणविक।॥११आदयवंमनिसमणराइअइयणरूप।रूपइमनमथगंज
मवंजनम।गामथरूप।मनमथनामइमहियति सललोकनरीतीर।सेपरमवराङनसिरिवासवप्पावजीर॥१२गुणवंती मदन
मतीमामिरकपवराविभ।इमयतीमनसाननीम्रसिनीइचि॥अमलइसीयदाम्वएपीहीमइकाय।फनकमालामरुकामतीरा 1

रूपसेनक॰
१

अनिति दयरसाय ॥१३॥ अइत्त दई जगदीसर। कुंअर प्रसमसोह। सिंघसा वकपा वकसमहरु सुंदर सुमदो रूपमेमन रूपयरायरति
पतिसमरूप। नलकुबेर अवतारलीयां जाणपरिरूप ॥१४॥ सुंदरवर रामसी रसोलागमियुग मिथन। मन्मथ मनवर रूपकांति सुरकुमर
समान। कला बहुत्तरि कलितललितवाद विद्याजाण। चंद्रकला जिम वधतीवधती बुधवखाण ॥१५॥ मात पिता मनरंजन तंजश्य रितउ
वा अचउर विचक्षण बत्रीसलक्षणचंचलवाउ। जाणे सुपुरुष रिषावरिषा जिमदातार। ललइलालचेक्षना घइद्यामइस्रनपलंदार।
॥१६॥ दूहा ॥ कामभोगसंजोगसुख। अधिक अधिक सुबसार। पूवजनम करियामीयइ। सफल थया संसार ॥१७॥ आं धानइजि
मस्राधर्म। तिम कलनउ आधार। असंमदीपउ आपगवमुतउ [illegible] तमद्र संसार ॥१८॥ बेदाफलथेछहम इ। बेसविरमजागसम ॥
जलमोडीय कस्तुकादि। पुनइजनम सविफल ॥१९॥ हाल [illegible] रजी चोपईनी ॥ ॥मधुसरदेस अखइ मालपा। अवरदेस
मात्र अलघी। सरडरध्र रनगरते सुणउ। राजपमाएन। [illegible] णो बेसणउ ॥२०॥ सकलभतायसी घरराजान। विष्णुगजमा
रथासीहसमान। मातउ ब्रकआखुसनेह। जीवएकतउ [illegible] इवेह ॥२१॥ सलीसुधनीमनसावती। रूपतिराणीमनसाव
ती। रूपसेन अतिरूपवंतसुणी। पुत्रीसुंकीयरणायतणी ॥२२॥ ने [illegible] णरूपसेन निरखीयो। हीयडोमनसावतीहरखीयो। जोइ
तिसांसरब्रूताजानगी। कादिघालागातेकोतगी ॥२३॥ इहपरिबेइरूपसेन कुंअरी। परणातसमां जासीउमकरी। तेपरणाव्योलघुसुतति
णइ सखीयो रूपसेनरूअमणइ ॥२४॥ सुंदरसुसनेहीप्रवजाण। पा रूपसेन बखाण। लघुपतिथी कसबलकालही। छुघवनापरण
योनही ॥२५॥ सरसवातलो काछकसुणी। लागोमनराइसुंतेतणी। अमरसमनमाहेछा णीलो। अवनीपतिसुकन्यापमाणीयो ॥२६॥
दूहा ॥ रूपसेनकेदइसया। चित्तवरावरप्यार। उनमइबेवा उनमनो। मन आपनो हीमारि ॥२७॥ कहिइ मधुरूपकीकथा। मधा
वोलाचहिभीत। कहिफेडुकाइसाकहु। मेरीलसुतामीत ॥२८॥ मइबेवेमेरोबंधव। लघुपरणाईनारि। अवधिगमरउजीवीयो। इ
कउयमनमसियार ॥२९॥ ढाल चोपई ॥ अवहीस्योनरआघोपकश। पच्चरमकाइसोताचकह। जागमइमानहीओहनव। म

अधिकउन मजीघ्यातेहनउ ॥३॥ पकपटवातमितासउकरथधी रजखेटउ किणयरिधरइ। दाकुतेमनमांहि विमासि। इमपरखननीक
सग्रउदासि ॥३१॥ केरमपरीष्याक रिसुदिवइ। निरखकोतगदेमनवनवे। तागमधाईसा थेसलो। आवरवाटचहइपफलो ॥३२॥ जायेअटवीमु
इकइजिमइभतिवाएकसरवरदीवो। तिसमक्षकरिसनानरूपसेनकुमार। आपलीयइफलफूल आहार ॥३३॥ घनसघनछ्कलसीतलछाद। वि
लंबेसाघाडवीचोर आधो जिमलायकइ स्हादोपारसनएदीवो प्रामभव ॥३४॥ सुंदरसुर तिसोषमणी। भनेोतेद्योकखिकुंवधणी। ध्यानसुवं
मांमंसल धरइ। एकमनांसेवाअनुसरइ ॥३५॥ पकरजोमीवजतथनाकरइ। हढचित्रामदेषंतोफिरइ। रूपसेन दिनछइतिवारइ। जसी
वातलालवेरलिषकरइ ॥३६॥ [illegible] ॥ एकदिवस्यावीमिल्यो। पफिमकरेप्रमेणा मारलसिवब सिवातांकरइ बेगातरु विश्राम ॥३७॥ कण
मा अउमारगा कुंवर। इमभवपएकंत। वासजोमीवांतणकरइ ॥ [illegible] संतसुणि विरतेत ॥३८॥ कोमपांचइ तेकहइ। विषमीत्तापणवाट।
सरपचारसीमसतबलो मधु बुरोलइपाट ॥३९॥ मारइजोबन [illegible] तइ विष। अनहिसयानकराछ। राइसुतनबबमानिरहिजम
सुरिकाप्टेजा विश्व४०। हालतीडी ॥ तणइमेदहरीछेसपद [illegible] सकंधसुणि। एहनी जाति ॥ रागआसासीभणो ॥ कन्हयोस
एनउरसुणा राजनकुंवर। कारकंदवीनतीइजिकाउ। वारथो [illegible] जानतणीपरसरवीयहइ। कोधनरसुफघचनहेमजाऊ ॥४१
कप ॥ श्रीप ॥ सिदयफवइसही। मापमवलीकाही। साथइक एक [illegible] जोइनत्रमाणइ। एथकोसउचपण आडीकोसपउलपण। सुग
सुगमणा सउलोकजाणइ ॥४२कप ॥ व्यारवारहवरसईसबलापसो। मुनीगोतमतयहीणमाणइ। नाएनवसिढनवजोइगारक्षु
ती। थिरसहसधूरसलमिरच्याथ्याणइ ॥४३कप ॥ कालरूपीकासीसलांवीअदादेहमहीकूंगटारुइदीसइ। मां वलीतनुबटाजिहवी
घनघवारीमजोतीवहइसस्यारीसइ ॥४४कप ॥ मांणसोबध्रकरभ रुधिरमध्यरसरइ। मिरदइडीवृजंतदयानाणइ। तीषणवनम घन
पेसिमांभरणसम्यथिररहइ च्यारतोभीखुप्याणइ ॥४५कप ॥ कुंअरकदेसाहसीकांसक्तमोहिलउ। वोहिलोकाछरंगरांद्रामो। तणइकर
जोकिमगधीसकमसा। तणो कइवनतणीद्दिवा तराचो ॥४६क ॥ विषधणामकरिविषमवाटइघरहपरइवकह्याइजोगीइआव्या। रूपसेनके

2

करमे सम मकरकरतां। वीरवरतेहजोगी मुद्रन्या॥४७॥ सिद्धवइ्यारजोगीरवस्मासता। अमसता मनमर्इने सुगतिमह। कुंमर लव
ना। जिमादेषिजा मिलसइ। सरकिमपाजीयो मद्द सनूरइ॥४८॥ का॥ पोषजोगी मुणपा च्यारिदेष अतविषालइ कपकजोगी विलाखु। निहणतो
सकनककेविनीपाषमर। जोइजमा सरेवाजजणा॥४९॥ कषा॥ सुरदेषीसुत्तटष्ट कामर मास्हसीक विमलापोनदी वासकोर्ड च्यारसइप
चिडकणंमस्तु विसंपदे सती विषसुघटनरम्पइल नार्ड॥५०॥ कषा॥ सिद्धवमलेग माव सतदेषा मिसजा। देषिवि कुंजोगी पतेदद्द। व्योविनु
मतइ पाष सहसा पक कंपावीय॥ दमसूवअीथ इवे सुताम्पो॥ ॥५१॥ कषा॥ ... कम्पर कवइ ई वसो अमलरइ। पावमी वेविनवामपावइ। व्याणम
कनु विभेषसेवे श्रीलनर। ... लहइवस मजे लेइ ममावइ॥५२॥ का॥ देषि च्यारेजणा ततमिलकजोहीया। पापुमीपदि रसभ्रवसतमारी॥
अकिरुसमेन कणजर मावीयो। कतरलोमागमाहे समासी॥५३॥ पुन्यहमाण तिहिांवसुपामी सुपरि। तोहसंकटविकटइ हिलाई
हीजीयम्हसुकमनरलाल चंदवृषि कम्ह छतविनठोषा मोत ... लाई॥५४॥ क॥ ... था॥ च्यारवम्ह पामीघडर। पुन्यतणइप
रताघा। इम सोजनम्रा घरइ। कथा षेपेरह राउ॥५५॥ सोनरेन्द्र ... लेपाघसह। सतोसाहसधीर। फल फलेवाही फली। वनवृष।
ताचमदीर॥५६॥ वरस मा जाणा आइ दिवा। जीलकईपति नागि ... कोषाही मषथिय। लालह परमरह सागि॥५७॥ सूतेकाण्यो मासली
अस्तुममाल कमदेइ। संकटआरी सिर धराइ। पाप सूटइ सलेइ॥५८॥ वलिन गोलावीदेवलव। जिम्वाई घरिलार। कारियाणया इरनीक
घा। वनिता दशविपार॥५९॥ ... ॥ सरसरी सिरहरमफ घरिरे। कुंवरांनेम कुवाररे। एहनी॥ रागकालाहरो॥ कणयाण्रयाटण
तलको। इहड्डरी ... तारे। कनककतु मराजाकघोरे। सावसियां सिरदारे॥६०॥ षाष्ट्रेसकुंवर। मानिनिहसो सामी सुंदर। मानिनम्हरे।
... लावाकर। एसवचनसुऊमाने। ... ॥ कनकमाला बह कामनीरे। कनकचंपक एकवेषानिरे। मटीसुकमकावतीरे। सुंदरसुंदरी ममान
रे॥६१॥ बा॥ लमणलावण लामिलीरे। जीवषीस्य विकीजाणरे। कोमिकलतनकरिरामीजइरे। रषवीपतिरहशाणरे॥६२॥ वा॥ चंद्रवदनम्भ
लोचनी रे। कुष्णभुयनाक समानरे। दंतजिसादाडिम कसीरे। अधरविंवुमवपमानरे॥६३॥ वा॥ कोकिलास्तकंठकंपसीरे। कादिकेहरि २

तट पीलरेकाएम्परकोष। जिमपातलीरे। कुचश्रीफलवंकवीएरे॥६४॥ वा॥ हंसगमणितेलनतीरे। अपछरनइ अनुहाररे। व
वणपछिरीसामनीरे। मजुमोवहसंसारे॥६५॥ वा॥ किमएकहुजीतइवा उंरे। वनिता नरोवषा पारे। नहो जिण निरषीनहीरे तिण
रोजनमम्भ श्रमाणरे॥६६॥ वा॥ तेरूपदेषिवि जीलणोरे। मुनिवरवंअम माणरे। पमीघडीजमतापरमदरे। एह सद्र भमर विमाणरे॥६७॥ वा॥
मस्हलएक सतभूमीयजरे। वंचीतेकुव वासरे। तीनसहसा ठिघारी तिणरे। पोढ़ागो षपवासरे॥६८॥ वा॥ पोलमतावीसध इतिणइरे
वारीऊ हीकिंवाडरे। इक २ बारी ऊघहइ। बावि नविन कीश्रामिरे॥६९॥ वा॥ निसरक्षो तग मवानवारे। निरपइनगरीमांहिरेको
जिला विश्रधिकाकरइरे। अधनीपतिकंमाविरे॥७०॥ वा॥ वा॥ ऊअंवररेग हरमहरे। वाणीजो वनघेमरे। ... रमीयरि मारती
रे। भितऊतरछनरे सरे॥७१॥ वा॥ मष्टिरमवाला सातसहरे। सुरसुसटनरसाथरे। तेकन्याजउउवरस्पे तउ निसुवन उजस्पररे
॥७२॥ वा॥ रतनजडितरवह डोलीयारे। मदिमाह छपिरा ... गाररे। पछिला लचंदकरहइ पुन्यथीरे। सुषपामेषी कारहे॥७३
॥ वा॥ ॥ ... राजा कुंमरनी रहित। मोसनपान हसा ... पर। मुंकामुक इती विना। सुपनलद्द संसार॥७४॥ मामणा
धीहतं श्रोलली। नाइ जिलीपजिनारि। वासिसोनारपामे ... मणी। भुतनीहतिविचारि॥७५॥ कर्याजनो पमकंसुउ। अहपमेल
पंक्त्या। माकरलिराये मोकले। कुमरीकविवासंग॥७६॥ वारिदेरी ... मानहिकि हिकीयो। कंचुकस्सभिकचयाउ। हम्पर देवी हमघ
रे। रूप हिसउरतिरा उ॥७७॥ तेजतमण जिसवदनतर। निपटरसलेनेल। कुंकुमासिककोरहइ। वोलेमीदेवेल॥७८॥ रूपजिदातिन
हंगुरानही। गुणसिरवी रुखुमंडि। रूपकांधा गुणचतुरसम। हइसघैउविमदि॥७९॥ मुंदरहु गलवणिमहित। पगटर्पिमद मथेमा
उनिदेवइ अलीजुरे। कद्दिन कणीसइ केम॥८०॥ जुं जुं मालणिवरणवई। सुंजुं कुमरीकाम। जुं जुं समलीलारइचढइ। सुंमनमथ
नई वाम॥८१॥ वम वधा वइगा फरी। विषधरलोजइमाय। वैरिवे विरहजउ कामरि। लिराजई चितलाइ॥८२॥ सुंसुंसोमोतीसुगह।
सुंजकमरी गुणचीत। रद हाकउनिपहरिवइ। ध्यानसदालयलीन। रमाइग्यारम छठाई। साऊमरीसमफाय। कामलगाएक
सामिनी। मृगपति उपाइ॥ ... ॥ कोईसबइ नोसणलो सहीहुवी॥ ... ॥ मद्दगाती मानलीमा ३

वइरे। प्रदेसीसुं प्रीति अपावइरे। म०॥७॥ इक अंबो महलउ वायोरे। प्रतिमाय इक मरन इ आयोरे॥८५ म०॥ जेन इन मीन इन मिलावइरे
॥मन गमती बात मना वइरे। म०॥ मन ऊभो मिलइ मानइरे॥ प्रितिसुं दे सालि खुवे पान इरे॥८६ म०॥ अथ प्रश्न॥ गाथा॥ ऊसल मिणं अस्त
णं कस्स॥ णायपञमसवणाणं॥ इ भिन्नं पियअसुहं जेवइ चलणं नवं से मि॥ एचिंतं उस्स मिलणं तो गुणयु णिपदिंयं चिय मालातो
मा भम्मवामतं जेपं तियवासरो रयणे॥ ३ तामइ मणो रहतरू। जो भिन्नो उ अदंसण जलेण। सो अफल विवधो चिय। ऊद्दस फलो होउ तेउ
णेसु॥ इह रहो दहइ सव्वी॥ अमी अंगे स्फिरसियो दरइ। दस इमियय विउगो। सयणे अदंसणे दहइ॥ ४ मुव्वे सयमलरकं। मुल्ले नदसा
रूपं धनकोडी। दिट्ठी एको मिसयं। पियसंगो होइ अमुल्लो॥ ५ जइ सो नीलकलाबो। पाउसकालम्मि पंजरे खुत्तो। मेलइ वनेर मिउ। तह अ
इमणो अमंसरइ॥ [illegible]॥ रूप राजकुमर तुरां मेरेसि लगो संदेसो मोरा वारे। म०॥ जुं कनक पीरोजा जोमी रे। त्युं कुमरिक
मर मिलइको मीरे॥८७॥ [illegible]॥ कदि तमरो अफंकेलकी। अति आवइ अनिपासि। रूपसेन राजा त्युं। आवइ कुमरि आवास॥८८
ढाल॥ आयालेअ धिक उमाहइ रे। वेप रप्याग धरव चीव दरे। २ह सिलसि वरग रलीयारे। मनमो हन वेउ मिलीयारे॥८
९ म०। तिकर इक रह लकेलीरे। चदी वंदन नागरवेलीरे। म० मना मनासाजन मिलीयारे। ऊष दोहग दूर टलीयारे॥९०
[illegible]॥ गूढा समस्या गीत गुण। कवित कथा कल्लोल। मित रसा हृतवनवा। भीवानवन अमोल॥९१ [illegible]॥ ऊमरी वचः॥
दाऊर सोयण अ छिघ सिण। हरि सुतवाहणजेह। चंद पीयो चोप इव। मिध रिए चाकुं प्रीले हि॥९२ कलिनिधाणाजे यकी। तेमा ऐते ऊपा
सि। कंचण रिउ दीजइ सदा। आ अनलाअ रदास॥९३॥ [illegible]॥ करि अरि सीम णितासप छि। तिलक सुवाहण तासु। मालेवण
पत्तिने नमइ। लाल पदवला सु॥९४ सा तिनाथ॥ जल सुत मस्सुतासुत। तसु वाहण तस सार। तस रिपु रिपु लवणपती। थण मुंऊ वि
मवार॥९५ पार्श्वनाथ। वन रिपुतसरि सुनासु रिपु। तस रिपु सांमीना रि। तसु वाहन लंछण धणी। ते जिणवर सुखकार॥९६ महावीर॥
श्रण समस्या॥ [illegible]॥ इंषुरस हरषीयो दिनएक। इमी धर लिपकासु विवेक। जीवित समइ पूल रहीयो अडी। चंदवदन तव क
हीचढी॥९७ [illegible]॥ चौदइ तनल्प इ सायर मथी। सुरनर नाग मिल्या सारथी। उत्रस मामघणो दिन राति। इम चंदा विलप निमरा

ति॥ए [illegible]॥ होय वमया वैगाए नकत लभ हेअइ संगमका रिवा मिलइ। वीर इसुजवल लेकण सौसोमाय मरे इभक मस
विकास॥९८ [illegible]॥ दिवसन पाव इहरणी किमइ। रूवन करइ नरनो ल्पो तिमइ। देमि सारंगी गइने चरइ। नइनानी रसी गइ ऊ
तरइ॥१०० अपहीयाली॥ [illegible]॥ कहि कोवमया जणउ। सव सायर मकाण सकोसे का को कुभमाण पादूणो। ने मिजिणं कहन
मा मिसहं॥१०१ [illegible]॥ [illegible]॥ वनचर वरइ निम्मध्यम नावइ। अंत विरूणो रामस्सु ना वइ मध्य विरूणो चिहुवन लिकइ। प
इभ विरूणो कहवि न दिक्कइ॥ २ [illegible]॥ रूप वच॥ मरकण जिकहि जइ किसु। पुन्नगाम कऊण नाम। ऊण आवणमूल इपिमस। किस्स
उइक रूप णाम॥ ३ सिद्धसेनजी ई [illegible]॥ अध मुहनयण सोलस पमरसु जीहा अचलण जुयलक्क। उन्निजियइ त्रिक रियल। नमामि
इंप सिसदेवं॥ ४ सम फ णाया [illegible]॥ एकोहराजा ति [illegible]॥ कदिकुं कऊमदीस इगाम। रकतपयो धरवीस इवाम। पकअ
बक रिकु घाई यइ। लालय ककतरइ ताई यइ॥ ५ रूपी फिते॥ [illegible]॥ अह मुह नयणि सोलस रूप तं तत्तीप रिहरइ। को
विकिमरह अवाल। का मिनअावइ किमधनुप॥ इक पव वत्तर नो सि॥ ६ गुणे न छि॥ गाथा॥ [illegible]॥ अध्वा सरमिपतो
नासोहरूण वरसिय वाला। कवे विल निसुला। नइ रमियकेण जूऊण॥ ७ उत्तरं। [illegible]॥ बालासं कासमये। कुल
सदरूण आगतेर मिउ। दिनमा लयगुवे। नइ रमीया केण जुऊण॥ [illegible] वती॥ [illegible]॥ अबल इ दिन घर माहे धणी। परनर संघेलइ
का विणी। आपइ आवइ अमसइ हसइ। कहि न इत पियकारण किसइ॥ ८ [illegible]॥ नहन मदेय इव चाको। निकंततेहनो पससमा॥ ति
लकारणि तप रुग वरमइ। कामिणि अवरमजारो किमइ॥ १० [illegible]॥ परनारी रमत व इक को इ। सास्ती रावल लेग यासो इ। घरपति
मी इव ऊतरइ। न किम प्रीकामम्मिक च रइ॥ ११ [illegible]॥ नारी सोग विपरिआ वीयो। तेह नइ माता धुरा वीयो। कहइ बालसुं समतिर
है। इम तेउ रु पथी जइ कऊतरे॥ १२ [illegible]॥ इम सहगूढा दाय इरे। तली समस्या पहेली वा गुइरे। म०॥ इमरं गरली परिआयऊ प
रिकूमरी अतिसुख पायोरे॥ १३ म०॥ जई भाइमता तिजगाय इरे। लागो मरहाप ल घाम इरे। म०॥ जाइ रणी को तजण लइरे। इण महले
कण मरका करे॥ १४ म०॥ कालकूं कहूं जे भूल रसीरे। कहि नेहनी सब सिकलकदिसी॥ १५ म०॥ करवा मनो घरका हरे। पोहिदिन लालच

रूपसेनराजा
४

मगरा इरे ॥ ७ मम ... ॥ सुमिरा आनंद्या ... मचिवसु सुदी नां ॥ मांस कउ कउ इसम कि । कर इ सु कुमरी कां ॥ ... सुरुपवाए
नइ घघुल । तला चढावइ तेह । जो इक कुमरी नइ जो । भिउ इ ॥ आयु उ अवसर एह ॥ १९ काया मूली कवल ज्यं । अकआर्ष नगुलाउ । आरणी :
मरिसंजा गिनी ॥ आइ उाणा यो रासि ॥ २० ॥ पारधी माहे घ ऊ ली । आगिय संत मवास । ते माया रा जाउ रत । रथ घाला सथ सात ॥ २१ महिपति मार
ता मां कीया । ऊठ नगर रह इकार । तब वेस्या विनवइ ॥ आई राजकवार ॥ २० ढाल ॥ बिंझ लीसी ॥ राग ... ॥ कहइ वेस्या करजे
ड़ी । राजा नइ अंचल जो डी । रा इ विचारो जी ॥ राजन किपा करी जइ । धरमी सु ढिली थइ धरी जइ ॥ २१ रा० ॥ जमरा ज्यु कां डी जइ । पाप इन
विपिंड तरी जइ रा० । अन्याय जनम हारी जइ । मति एवडा नर मारी जइ ॥ २२ रा० ॥ यत : ॥ भूतकारकलारक्को तेतिकोमांसविक्रयी । वा
केच्यपतिर्वैद्य : क्रिपया सप्तवर्जिता ॥ ७ ॥ ... ॥ अममअगो दस्या ... वइ आकहिलो कारइसिइ कावइ । रा० । मा थीसो वोरी लावइ । वेश्या
... नवसावइ ॥ २३ किइ पार्वो लाज इवाशी । रं गिसु भिउ अोर । आरा० ... २४ रा० । भजि लतमा सवषारणी । ते जंयट आ ली सुता णी ॥ २५ रा
० । दोचोर न आनइ हाथे । सुकमारे सज्जन इसा ० २६ रा० । मरणा ... सल मिरा थइ । रूपतलो अक रित्ता थइ ॥ २६ रा० । नाथ वइ
नगर निकालइ । वनवा मीआ रा मअटाल इ । रा० । देस इंरा सदेव ... जइ । चित्ता ली जो स्व चालइ ॥ २७ रा० ॥ मण सिंदूर मंगा वे ।
अधिको वलि तेल अणावइ । रा० । प्रमदा म हिलनी पावइ । विवियुलि ... गज कुमरी सुवरावइ ॥ २८ दूहा ॥ रूपसेन रंग ... मइ । सलनवइ
रसवेग । मन माने जी मी मिली । सुकृत तणा इसे जोग ॥ २९ रूपसेन आयारहसि । समली इणी आस । वंछति मनसु प्रस्तोपावइ ॥ भजवला
तणा इस्या वास ॥ ३० ढाल ॥ फाकिली ॥ उ ... तेआवइ । जो इवा गोअ गनिजलावइ । रा० । खान सुवास लगावइ । दिन रहे हैअ धिकइ
रावइ । ३१ रा० ॥ ना अका तिरतिम काई । तिलि घुणातीस दिन त्तर माई । रा० । माल णितुं समझाई । जो इम हिमादं दुजा णाई ॥ ३२ रा० । अ
सुकं पा मनि आई । दिनदी समइदी धीदि घाई । रा० । लही सिंदूर इवाणी । तिण वेइ पारो रह इ तागो ॥ ३३ रा० ॥ ताल चंदक हइ सुंपत्ता
णो । सयलोकां रोस जलागो । रा० । राइ पासे ते जाणी । स्विसुणि इंडली अधिका ही ॥ ३४ रा० ॥ दूहा ॥ रूप अधिक गुण आगलो । दीप इवि जि
मदेस । पइ मा हे कां जी पमी । इस सुणी मिया एह ॥ ३५ देखो ने हलजी ... कार । सूरज णो ते मानवी । कुमरी करइ इका ...

ते भइ माल सि आलइ उं मुणि मरि सु देव रूपसेन विनतां रउं । रूपदि माय्यो देव ॥ ३६ तरिया तइन कियारसु देषि पाल वीया सुष्य । दाथी
हसो ना तणी । तन जो वन ययो सुष्य ॥ ३७ विधना घणुं विरांसियो । पापकी यो अपार । साजण रतन विणासीया ॥ ३८ करी निरधार ॥ ३९ ... कमै रुभइ
ने आंसु ऊरस्या । वलि भ कर इ विलाप । वांकी ऊ इं दिधात रा । सुंदरि वीयो सराप ॥ ४० विणरो वइ ... विलविले । जुवती माचल जेम । प्रीत नुसर
जलडे भवि ण । आडर रूई एम ॥ ४१ ढाल सातमी ॥ रूपी रे रवारणि रामला यद् मणि रे एहनी ॥ राग मारू ॥ वाल्हो रे विदेसी लागइ वाल
हो रे । कुमरी कहइ ... । मात्र रइली थइ सुरगी मारयो जी । मम परणि मरि वो माफि ॥ ४२ वा० । आ० ॥ नयन नदे शमाझ रो नाहुलो जी । सू
ली सरिषी से ज आज निहोजो । सइ अंगसो जी । थीय फ इपा रखो चे जा ॥ ४३ वा० ॥ आजस को हारा नि अई वस्यो जी । मुक पर देसी मीत ले
वा वाली रूसीवा तमीरे । चोरी लीधउ चीत ॥ ४४ वा० ॥ शीपा मइ पिमाया ... रि उजी । धिग जीव्यो मुझ ... । वालेरइ आउ विलोहीयाजी ।
करतोर की धो ... ४५ वा० ॥ देवि मालणि थी रए री ... जी रहि ... आज नी राति । निसा पनी स्युं नी सरी जी । लीयो नवि संधा
त ॥ ४६ वा० ॥ मालणि कुंवर मस्तक इ जी । वे ... काव इ ताम सु ... णि निउं केला इ कन्नसी जी । लेहे गोरखना भ ॥ ४७ वा० । देख
सलाई पहिल इदंड वीय इ जी । बीज इ घाफ इ नेत । जो इवी जइ ... रू जीवीयो जी । सुंदरि कीयो सचेत ॥ ४८ वा० । साकर जल
निणि पामो सही जी । आयउ घरि उछरंग । करि तिजन इवीक थाजी । ... रज्या कुमरी रंग ॥ ४९ वा० ॥ सीष करी नइ मालीसा थसुं जी । स
गली वस्तु संघा हि । उंकमरी नइ लेक रीय उजी । चित सिइ वड नी चाहि ॥ ५० वा० । सूती जागी वडल इ सुंदरी जी । सूतो कुमर सुलाज
नो खिवे ली दिघ इ पोटली जी । सकजो गीन उसाज ॥ ५१ वा० । हूं तारउ तिणि जाणाउ धणी जी । आई निज आवास । कहइ गणि
लच दन की जीय इ जी । वनिता लए उवे सास ॥ ५२ वा० ॥ दूहा ॥ आरिविस वनिता वउर । गई जाणि सुण वंत । करइ सुघल मावो
कुमर । इम चीतवइ इकंत ॥ ५३ सिद्ध वमतु रूप हिली सफल । अफ लिपयो ... णिवार । विधि जाणी विपरीति गति । कंप्यो रिदइ कुमा
र ॥ ५४ । लग जो गी नइ भइ गयो । न ... ठगीय उना रि । सिर धुणइ नइ कर घसइ । कि सुं हूं कर ता र ॥ ५५ ॥ ढाल आठमी ॥ ला
लमी हन मेरे जि वसे । एहनी ॥ राग धनसिरी ॥ चतुर कुमर वडल इ चढ्यो । रहीयो पर धन री तो रे । इक जोगी तिहां आवीयो थइ 5

।नइजो गि रिसि सुविनी तोरे॥ ५५चप।।आंण। वइ इक करि जोगी कहइ। एसल इसुविवा णेरे। ग्या नवस्तु आपणी गई। समम ग्रह्म ५ आ
यारे॥ ५६चप॥ जो गिरि कहइ का इस मी। कहि सुकन इसं कंतारे। वा नरकी इ इ आ छंटी। आनृस की एकंतारे॥ ५७चप॥ वाटइं ते वल
ता इत्वा। कुरंम स्करहमनकाजोरे। जुगत इली थवि स्त्र झंकी। नगरि गया ये नरराजेरे॥ ५८चप॥ रूपसेन वा कीरहो। मा ली मिल्या मनरंग
रे। कहीमाल णि सुवी कथा। रच्यो वा मरस्थ रंगइरे॥ ५९चप॥ पहि रिकल परसहनी। इस लकरा वइ कोरीरे। ग्रफि तसो वन मा लि इ घरा
गलि मब इली जोरीरे॥ ६०चप॥ पावइ पंचरंग इवना। इसत नेजरी रणकइरे। इंद इना च इकिज किल इ। थावो यगि रवण कइरे॥
६१चप॥ रूप तजरूप ईवानरउ। इम माल णि ले आईरे। जोमि रहे मइ इनी मिल इ फल कलो कांईरे॥ ६२चप॥ मइतमाल णि न इस्प
घण॥ इम थानरे आणावइरे। आमरी दिन को तगकरइ। राधइ रूप दावइरे॥ ६३चप॥ राति पहोरसी एकाली। कुमर रूप लगइरूप
रे। कुमरी सुकी डाकरइ। च्यार पकमवि तसुंपइरे॥ ६४चप॥ थनि ता की थी वा नरी। उमि माल णि घरि आवइरे। जाल चंदक
इस्ल रूपती। तलइ दिवइ सरमा वइरे॥ ६५चप॥ इला॥ उ पहि इरूदी स्नग यो सयो। सुंदरि नदी ठी सेजि। वइ ठीदी
वीयां नरी। ध्रुइन की नो हेज॥ ६६ चातां राजन सुंकही। अति जल लाराउ। हेहे इजकेसीसई। उसमन थे ल्यउ इ। उ॥
॥६७॥ को लायरा जात वह। जे जाण एके राग। रूपनपायो कुंवरी॥ कीनिव जत उपाउ॥ ६८॥ [ढालनवमी]॥ ईकर आंखा आंखा नीरे। पु
रुनी॥ [रागांनबो]॥ दिवइ कुमर जोगी रूवरे। गाय इं त्तसमलगाइ। पप्प रदंमके थाय वइरे। चरणा थावमी चरका इ॥ ६९॥ राइ सुत की थउरे
सुंदररूप॥ उमिस लिसर भाय उन्रूप॥ रा६९॥ [आंकणी]॥ विग ता लीवइ वा गुलीरे। कनककं[illegible]डा थ सिकं नि। वेपरवारी तिलय सइरे। अ
लघनि रंजन ध्यान॥ ७०राण॥ पाल मिवाई पगि ए गइरे। सोगल मलव इ जर्मा ति थ। इथ वा वइ थल कनुरे। जगि स जुज्ञ आव इ ज्ञात॥ ७१राण॥
सिद्धना थजोगी सुणोरे। मलिय तिहां इकजमांना कवि शणामवइ वे कन इरे। परवी पोफो फलपांन॥ ७२राण॥ थातां राजा वीनवइरे। कुम
करि उपगार। सिरु उरथ मई इं सुण्येरे। वेगमला वउवार॥ ७३राण॥ वलतो जोगी बोलीयोरे। सुणि राजन सु विचार। साजी कर सुं सुंद
रीरे। अलइ अनेकप्रकार॥ ७४राण॥ करहेना थरे इ सिकि सुरे। राइवइ इरंगरोल। सुणि मांग्यो देसुं सही रे। मान विधाता बोल॥ ७ ५

सुंस सवद करेसा इसीरे। सकुलो कां रीसथा आवनी पति ले आवीयारे। रीज्यो निज घरि राय उइराण। मासवठइ उसी मानवी रेजो
रा। कहइ सुवान। सुंजाण इ सुंजोगना रे। एसनइ कां रिआसा व॥ ७७ राण॥ राति रमणि दिन वांनरी रे। मंत्र कारण ५ वइ मांन। लाल चंद
कहइ सुणो थनरइ इरे। [रूपसेनराजान]॥ ७८राण॥ [दूहा]॥ सोगनलानि तिमगइ इराति सम इरं गिरासि। किंपा वचन सांभलि कुंवर॥
इन वानीम्ररवास॥ ७९॥ मा इरइ सङ्कन मिलइ। ईयडा नो हलि वा राणि जन दीपणा जणो। तो थाइ इत रताग॥ ८०॥ [ढालदसमी]॥ मेरेह
इनां। [एदसी]॥ [रागकेदारो]॥ कुंअरउ पवनी पान सीहेसां उं सिरइ नो सिर ता जा मेरे प्रीतम॥ कुंता इरीत नुकांई मीरे इं। एकता इरो आ
धार॥ ८१॥ मेरे प्रीतमां॥ निरुपम सगुण निधना। मेरे पीउ॥ [आंकणी]॥ पिता मात बंधव पष इरे इं। उऊ सुंकी इसंतो सामेरे पी॥ उप इ उं ही जमोहे
धीयइ रेहां। धरुं सबल जिय सो ष॥ ८२मेपा॥ [एम]॥ [ग्या मवइ] मेव सयेन्न लीनी। रमी वं मु नूण सस्वरे पज्ञा। तइ बिल्हि मे एदहा। नव
लइ अब कियं कम॥ ॥ [ढाल]॥ थम वानि मि ति पांन ही रिरहां। जो इ रात इंतेजा इ मेरे पी॥ काम जे अवि चार इ की यो रे इ। मोसुं सिवस
थमाइ॥ ८३मेपी॥ की डी क परिकटकी किसी रे इ। सकम विसु यो जोर। मे॥ रो सन की जइ राज वरिहां। नाइला मां नि बिहो र
॥ ८४मेपी॥ मा थइ डो रतन गिल्यो रेहां। पेट नका मइपीय। मेपी॥ को अवला अवगुण की य उ रेहां। जोयन मार इ जीय॥ ८५मेपी॥ श्लो
क॥ स्या तं सर्वस्यदा तस्य मेक वारपरा धिनः। इति ध्यय तन्नदंता॥ चक्रे णापि वि विजिता॥ [गाथा]॥ आइ वड्डा ण नकारु हा। उल्कस
मेसु सा मित्ति वेमु। दहियं पि मरि ज्जं तं। छम इ नेहं नसंहे हो॥ [ढाल]॥ उन्प वंत नर य रग मोरे इं। रमणी अवगुण रासि मेपी॥ कंतारो सन
कीजी मइरेहां। दाम विनार्ड दासि॥ ८६मेपी॥ प्रमदा इम दिन दिन घत इ रेहां। कउलाकर इसेवा स॥ मेपी॥ ना देलो मा न इन दी रे नारी श्रइ नि
रास॥ ८७मेपी॥ ऊषर खेत जुं कक सइ रेहां। ता मि शिवचन ति शिक्षा त। मेपी॥ लाल चंद कहइ लाजिस इ रेहां। काइ पकी चित थांति॥ ८८मेपी॥
[दूहा]॥ [राजासुणीरीकीया]। कीधो कुमरी रूप। देव सुंमो बुंदी जीय इ। तलो वचन करि भूप॥ ८९॥ मां मो जे तेमां गिल्यो। अइस बोल्यो एम॥
रमसा इनहीं पंतविण। तक नि पथइ तपतेम॥ ९०॥ जपतपजो गुमंत्रा सजरि। लइइसुफल अमलो ग। आगफल कहि जे सुंदरी। तसुफल
उत संजोग॥ ९१॥ [ढालइग्यारमी]॥ सणइमवे दशी देश पदस कं धसु णि पइ नी॥ [रागसिंधुउ]॥ कइ इराजा न थरि कांन इ राइसकु वराज

6

वंतलो सामिनी चलो। सिद्धि अति विमो जोगकी सरमकरि। मस्तकम हिला मस्तक कांइ हलो॥ ८४ कडवा॥ आंचा॥ जोगी उवाच॥ सुरन
रइंद्रमइंचंदनागेंदसह्या रूपइस्यारकोरचखुरूला। सामुत्तमथानसेरवप्रमुख सलसला। सामिनी रूपकरुणइन सला॥ ८५ कडवा॥ रा
जा उवाच॥ लीयो तइंजोग संजोग लाल चमकरि। ध्यान धरिव मविचरि नगन धारी। कलंक लंको अब इ जोग कलंक मा। हूं कि
मां धरम मरिवो कितारी॥ ८६ कडवा॥ जोगी उवाच॥ महा व्रत पास सरमो लियो। गोतम रिषि ष्टिल्पा मुदारी। कामरम स्ति ब्रह्मा रिषि
सिकीयो। निर षिमहादेव अरधंगनारी॥ ८७ श्लोक॥ यत्वबला दयो देवाः ऋषयः कपिलादयः। योगरूपमहासिद्धाः ते पि नारीवशंग
ताः॥ राजा उवाच॥ ढाल॥ राजरमणि सुसंजोग संजोग रस। ईहां तजी राग वैराग आणी। गो पीचंद भरतरी नाथ नवनी सिद्धि गि
णि। जोग मारग लहो तलोजाणी॥ ८८ कडवा॥ जोगी उवाच॥ अनिणग तिनदी सरग पामई कवा। निरषि अपूरव मंगलनिवारइ
पेषि जमदगनतापसइ जनीवरी। सुतवदन निरषि अगलोक सारइ॥ ८९ कडवा॥ विलसिसुषकमलराजा वदइमोगिवर। देषि
कनकावती कम स्त्रीजइ। अविचलवाचनु जोगी कहि सुको अबालषपती एह जगि सुजससीजइ॥ ९० कडवा॥ न
रपति कहइ जोगी कंथ रिनां दीयउ। देविसंसारनफलवरदे। सुकोण सुकृथी अधिक नलहिसि राजान कहि। लाय त्रया वकहि
एह लेसुं॥ ९१ कडवा॥ इम कहि राजन राजा न खुत्तहे रल्पो। इम नि जोगीजती सिद्ध होई। लषपती समकिते पत्रपती कुंअ वडाकडि
अरा रिसो नरनकोई॥ ९२ कडवा॥ प्रगटकरि रूप कहइ सुरस आदरपणइ। कमस्तत्त सूल गोरूप की धो। कहइ श्री लालचंद चंदस
रिसो कमर। लषपतीसिरोधियत्तिपासि लीधो॥ ९३ कडवा॥ ढाल॥ सं मनइ अब राजवी। सकज अपाणी संबंध। काजो नी कुंवरकहो। हरष
जो परबंध॥ २०२॥ किल परणा वीक वरी। राजारंग रंग। मोकलावी करि मोकली। अवनीपति अभंग॥ ३ ते निज नगरी आवीउ। बार
बरस पीवीर। अन बकरि घरिष्ठाणीयो। सुषपामी यो सरीर॥ ४ रूपसे नराजन करि। रूपराय सुवराज। थापी निजपाटइ सुथिर॥
का एहसु आतम काज॥ ५ अठ दिवस वव कीयो। देई वकलो ध्यान। लषपतीये संजम लीयउ। पालइ मेरुसमान॥ इहा कलसी
एहनी। चितचेतन करी॥ पहिली व्रत यारणो रे। अवम अवमश्री चारा चहती तपयइ कीचमोरे। अंत अरस अहारो रे॥ ६ म॥ मन
मनमथ मुनि निषयो। बहु विकारो रे। जगस अणीयो। अथिर अनित्य असारो रे॥ ७ म॥ टेक X ३१ ६

मथ हरू तं मस्सासु नीरे। कम्रम सुकावीएह। वालइ अनिमसावइ करीरे। तपसुं अगतिकसूले वोरे॥ ८ म॥ दिमइ निजइंद्री दमइ रे। सुधअम
नसंवेग। जीवनणी जइणा करइ रे। आणइ नहीं उदेगोरे॥ १० मन॥ जो वोने सुंजज [redacted] निर
ममकरि निज कायो रे॥ ११ मन॥ सो धरम इसुरवर अपारे। विरसवक रमी च्यार। महा [redacted] अथि
नुधीआ पयी रे। कीधी उग्रम कोम। करजो मी लाल चंदक रइजी। सहसमिचरण प्रणामी [redacted] वीया॥ ध
रमषा प्रगाण धीर। लील। वसैउद्यानलहि। समो सरया सुषकार॥ ४॥ इथदीप तिघरवारसु। नइनगरी नो लोकावि वा गुरुवांदी करी। मज्ञा
मायासाम॥ ५ दीधी सुधरम देसना। रंज्या चित्त राजान। धरवचन वसंवेधपणि। सद्धी पइ परधान॥ ६ रूपसे राजान उसं तलि हिव संबंध
रूपा करी श्री गुरु कहइ। श्रवण तब परबंध॥ ७ ढाल तेरमी॥ इका तीसानी॥ रागमल्हार मिश्र॥ तिलकाउरिरे। कोसंबी सुंदर तोर
ण। धरिघरि णीरे। सा रूनाम इहितधणा। करक्षकार सराएदरसाण मानमहंत दीयइ। उत्रपो तेरे। लषमी नो लोमही लीयइ। लियइ
सुजस जगिदीनइ षित ला। बिपर बनय इस्रणी। वङकाजस रक्षत लइ वारश। विद्या तइ बहुरूपिणी॥ आरंतअधिकेदय
नाणइ पुण्य आगमपरियदृश। राजानमानइ वरू इवानइ। रातिर नसुधीया रहइ॥ ८ ति लिखिव सररे गुरुके इक आया तिहां। ज
ईयां वरेश्रावक जन वइवा जिहा। कोसंबी रिसदगुरु सनिअ आदर करि श्रमपाणिरे विहराव इ आगलि धरी। बडधरी सवा उत्पलवास
गुरुपासे बइसता। गुरु कहइ अरंस पाप थाय इक्रम तिआये दीसता। परतव सप्रा इ लसो नाइ दिया रूडी पालीयइ। सुरनर तणी रा तिसुखस
हिलाइ अप दोढिला टालीयइ॥ १ ॥ को संबी रे गुरनइ कविजोमी कहइ। इसमदाषो रे जे गुरुकथी मोहि लावइ॥ सुसपात्र दरे। अन पाणि दिजो स
हो। सुणि सवार। जिन धरनी करस्ये कसी। कडीमोटको वंजीवममोरे। रात्रि राजन वरजउ। ए नियम कीजै दया पाले विवरु रथजे॥ हि
वते सुंदरम गुणमंदिर। श्रावचनवीय इ धरइ। दिन इत्तइ पालइ धणइ कालइ गुरु वचन आदर करइ॥ २० इक दिवस इरे। वापसंआणइ
आवीयो। उज्जनि इसे जई सुंदरन इसणा वीयो। मन्हिलान इ रे पीहर इम विमोकलइ। धणि सायइरे धणी याणी बहु अक लइ। सेफलइ नारी 7
उनर दिसुं। वापसाथि सिधावसुं। दिन पांच सात सुरही पीहर। देखिव इ मीलय सुं। ओ इम दइ मातो न इरी मासो नारि ते रामा हि इकी। सुम

रूपसेनरास पत्र

७

रो॰सील इवां षिवी लज्जमर सुंदर धारी करी॥२३ हिय धील हरे। वार घनी वो अोरद ह। दरषो फीरे सुंदर सु सरान दकस ह। मनीसात प
रे। रू॰ वधी मई दासी मां कीयो। षिण काम गारे। देषीत्र मनड उघदीयो। उघदीयो नारी कस्त्र दारी॥ कापड रूई सांनही। युवती कन्द ड
[illegible] ड जन जीवं सुणि जमरि सेसही। सुदरीसम जाई नसमजी ई माया। साथ मो कली तदिन थी सल गिति हार दीदाल। धमीक्षा
जी कली॥२२ सुरषग्नु नडरे। कोई बीम रिनड सही। मनम ए धरिरे जेज वसरीया डमकही। करमड सुसइर सा कूम विकल ना वत
।धरव सवरे थई तिका डेमावती। जमाव तीनड घमी वारड सुनमाय विजो गीया। तिण करम बारह वरस तानड मा धमा पतती॥
षया। दाषीया सुसरो। जुत दवी लड लित ड तुस्स लीरियु। विडजनी म पा स्वालरी सद्गुपमव सु च्या रु इम कह्यो॥२४ हिवसी कुमार।
जेअवो करम करड। तेलह मनरे पुन्य पाप पोता रदम। तिण कारण रे। मनुष्य लप्रन्य थपाई यड संसार ह दे सुष्य अनंता पाईयइ॥
पाम्मिड सुरनर मो क्ष मा। सुध धरम नि चलपणी जीयड। कदया पालो जन्माय टालो। दान शील तप भावना जीयड। सुध धरम
भक्ति मनश्चर। किमरूप सेनश्राव कमन्द। जिनधरम रामी जुन्य पामी करइ स्नाल पंच पि मुदा॥२४॥ ढाल चोदमी
मोति सिणगार थपाऊ जाऊ। [illegible] सिरी॥ रूपसेन जसी रू॰ मो। वचनम बोलइ कूड लोइ रू॰ एथम [illegible]॥ धरमी ति
[illegible] तव नस धरणी। करमस वलसुन्य करणी। रू॰ ए। बिवजी वारी नि कह हिंसा। साधजन नकरइ मन मंसा वे॥२५ रूपाम विद्या लि धनू
रमं ड़ाच्या। दान धर मही पाया वे। रू॰ [illegible] पाय पाप विसमन मरू टाल [illegible] जाप जिन मपालइ वे॥२६ रू॰ ए॥ श्री वरपाट थापी अंत काल ड॥
कीय उरा जोवर काल इवे। रू॰ ए॥ सू धूकम्मण मषांगुरू मुष लेई दान [illegible] थन इदे ईवे॥२७ रू॰ ए॥ अतीचार समऊ पाप चमाई [illegible]
रमड सुरत्तो इवे। रू॰ ए। रूपश्री जपस सारइर हमी। लीलपर मपद लह सी वे॥२८॥ [illegible] तउ अनसंघ। मरी आवी [illegible]
नसुसी सार्वो रू॰ ए॥ [illegible] लच दिक हूर थुरा वृंता। कीजम सुकत [illegible] वंता वे॥ रूपराय सुवराज। थापी निजपाव [illegible]
मनिहरस वे। रू॰ ए॥ सु न्यरू प [illegible] सुघ थाप्या। [illegible] लवंस्सु पु पया वे॥ ३० रू॰ ए॥ [illegible]
घम वे॥ ३१ रू॰ ए॥ [illegible] पुन्य विषय [illegible] राजा वड [illegible] समाप्ता॥ [illegible] ॥ श्री [illegible] कल्याण मस्तु लेषक पाठकयोः

७

सोम 34